17.29 hrs.

Title: Discussion on the resolution regarding conversion of State Highways to National Highways moved by Dr. Madan Prasad Jaiswal. (Not concluded).

MR. CHAIRMAN: The House would now take up item No.36.

Before we take up the Resolution for discussion, we have to fix the time for this Resolution. Shall we fix two hours?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: Two hours has been allotted.

डॉ. मदन प्रसाद जायसवाल (बेतिया) : मैं प्रस्ताव करता हूं :-

> "कि यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि वह बिहार और उत्तर प्रदेश राज्यों में राट्रीय राजमार्ग संख्या 28क को छपवा से कुशीनगर, बरास्ता बेतिया, लॉरिया, बाघा, छितौनी रेल-सड़क पुल तक बढ़ाए और सभी राज्यों में महत्वपूर्ण राज्य राजमार्गों को प्राथमिकता के आधार पर राट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित करे।"

सभापति महोदय, मैं इस सदन का आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि मैंने जो आज का मुद्दा उठाया है, वह राट्रीय हित में काफी महत्वपूर्ण है। राट्रीय राजमार्ग की व्यवस्था देश की आजादी के समय करीब-करीब 2500 किलोमीटर थी जो आज बढ़ कर 57,000 किलोमीटर हो गई है। इस दृटि से मैं मंत्री महोदय, विशेाकर अपने प्रधान मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस देश में, जो परिकल्पना आज से बहुत वर्षों पहले शेरशाह सूरी ने की थी, शायद शेरशाह सूरी के बाद इस देश के नेतृत्व में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं आया जिसने सोचा हो कि राट्रीय राजमार्ग की उन्नति कैसे की जाए।

यह संकल्प विशेाकर मेरे इलाके से सम्बन्धित है जो बिहार और उत्तर प्रदेश को लेकर है। यहां जो इलाका है, वह पिछड़ा हुआ इलाका है और नेपाल की सीमा पर है, उत्तर प्रदेश की सीमा पर है। उत्तर प्रदेश के बहुत से ऐसे महत्वपूर्ण स्थान हैं और बिहार के ऐसे बहुत से महत्वपूर्ण स्थान हैं, जहां से मैंने सड़क की मांग की है। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, वह नेपाल की सीमा पर है। बिहार का वह भाग वर्षों से उपेक्षित रहा है। आवागमन की हमारे पास सुविधा नहीं थी, हम वहां से दिल्ली नहीं आ सकते थे, क्योंकि बीच में गंडक नदी पर पुल नहीं था। आने-जाने के लिए हमारे लिए न रेलगाड़ी थी और न सड़क थी। 1928 में बगहा-छितौनी का जो पुल था, जो अंग्रेजों के समय में बना हुआ था, वह बाढ़ के कारण जब धवस्त हो गया तो हमारे लिए सड़क मार्ग भी नहीं रहा। मैं आज अपने रक्षा मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि जब 1989 में वे रेल मंत्री बने तो उन्होंने कहा कि बगहा छितौनी का जो 1928 में पुल ध्वस्त हुआ था, वहां रेल पुल के साथ सड़क पुल का भी निर्माण होगा और रेल पुल के साथ बगहा छितौनी सड़क पुल का निर्माण शुरू हुआ। रेल पुल तो काफी पहले से बड़ी लाइन से चालू हो गया है और बगहा छितौनी सड़क पुल भी इस 31 मार्च को तैयार हो जायेगा।

बिहार में जो एस.एच. 64 राजमार्ग है, यह छपवा से होकर बाल्मीकिनगर जाता है। एन.एच. 28-ए की एक सड़क छपवा को जाती है और एक सड़क रकसौल को जाती है, जो नेपाल में काठमांडू जाने के लिए एक रास्ता है। छपवा से एक सड़क बेतिया को जाती है, जो जिला हैडक्वार्टर है। उसके बाद दूसरा स्थान लौरिया आता है, यह ऐसा ऐतिहासिक स्थान है, जहां नन्द वंश का राज था। वहां आज भी अशोक स्तम्भ स्थापित है, जो हमारा राट्रीय प्रतीक है। नन्दनगढ़ का जो किला भी लौरिया में है। उसके बाद वह सड़क बगहा जाती है, जो बगहा पुलिस जिले का हैडक्वार्टर है। उसके बाद बगहा छितौनी पुल है, जिस पुल का ऑलरेडी निर्माण हो गया है। वहां से सड़क कुशीनगर जाती है। कुशीनगर भगवान बुद्ध का एक ऐसा पड़ाव है, जो उत्तर प्रदेश में पड़ता है। मैं केवल बिहार की ही बात नहीं करता हूं। मैं उत्तर प्रदेश के लिए इसलिए मांग करता हूं, क्योंकि उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल बहुत पिछड़ा है, वहां आवागमन की बहुत असुविधा है, इसीलिए मेरी यह मांग है। इससे केवल हमारे इलाके के लोगों को ही नहीं, दिल्ली से आने वाले लोगों को भी लाभ होगा। इस राट्रीय राजमार्ग से यदि वे नेपाल में काठमांडू जाना चाहते हैं तो उन्हें लगभग 150 किलोमीटर की बचत हो जाती है। बगहा के लोग, जो बेतिया होकर, मोतिहारी होकर जाते हैं, उसके लिए अभी वे एन.एच. 28 पकड़ते हैं, उनके लिए करीब 250 किलोमीटर की बचत हो जाती है। जो उस पार के लोग हैं, उनके लिए यदि राट्रीय राजमार्ग की यह व्यवस्था हो जाती है तो आने वाले समय में उन्हें बहुत सुविधा हो जायेगी। इसीलिए मैंने इस सड़क की मांग की है। मैंने किसी नये एन.एच. की मांग नहीं रखी है। मैंने कहा है कि एन.एच. 28-ए, जो पिपराकोठी से लेकर रकसौल तक, नेपाल की सीमा पर है, उसमें एन.एच. 28-ए और उसका एक पाइंट छपवा है, छपवा से मुश्किल से यह टोटल सड़क, जिसकी मैं बात कर रहा हूं, लगभग 140 किलोमीटर से अधिक नहीं है, यह मैं एन.एच. 28-बी की मांग कर रहा हूं। यह इतनी मुख्य सड़क है कि जिसका कोई हद-हिसाब नहीं है, उसकी सीमा नहीं है।

मैं मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के बारे में चर्चा कर रहा था कि शेरशाह सूरी ने पेशावर से लेकर कलकत्ता तक सड़क बना दी, लेकिन इस देश के बारे में किसी ने नहीं सोचा कि राट्रीय राजमार्ग की उन्नति कैसे हो। हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी ने सोचा कि इस देश में यदि बड़े-बड़े डैम बन जायें, यदि बड़ी-बड़ी स्टील कम्पनियां आ जायें, यदि हैवी इंडस्ट्रीज की कम्पनियां आ जायें, यदि आई.आई.टी. की स्थापना हो जाये, टैक्नोलॉजी के कालेज खुल जायें तो शायद इस देश की तरक्की हो जायेगी।

यह उनकी सोच थी और उन्होंने इस व्यवस्था में काम भी किया। श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनीं। उनके समय में हम खाद्यान्न में आत्म निर्भर बने। पहले हम पी.एल. 44 अनाज अमेरिका से मंगाते थे, लेकिन उनके समय में देश खाद्यान्न में आत्म निर्भर बना और अब हम विदेशों में अनाज भेज रहे हैं। फिर श्री राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने। उन्होंने इस देश में नई गाड़ियों का आना चालू किया, नई टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर और इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी का युग शुरू हुआ। हमारी सड़कों पर नई गाड़ियां चलने लगीं।

मेरी एक रिश्तेदार अमेरिका में रहती है, वह दस साल की बच्ची है। जब वह यहां आई तो मैं उससे पूछा कि अमेरिका में सबसे आश्चर्य की बात तुम्हें क्या लगी। इस पर उसने कहा कि मैं अपने माता-पिता के साथ रहती हूं, यह वहां आश्चर्य की बात है। मैंने कहा कि इसमें क्या आश्चर्य की बात है, सभी बच्चे अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। उसने कहा कि नहीं, वहां कोई बच्चा या तो माता के साथ रहता है या पिता के साथ रहता है या फिर अपने नाना-नानी या एडाप्टेड मदर के साथ रहता है, पेरेंट्स के साथ नहीं रहता। मैंने उससे फिर पूछा कि तुम्हें हिन्दुस्तान में क्या आश्चर्य की बात लगी। उसने जवाब दिया कि यहां इस बात पर आश्चर्य हुआ कि सड़कों पर आदमी, गाड़ियां, रिक्शा, बैलगाड़ियां, तांगा, साइकल सब कुछ चलता है, फिर भी एक्सीडेंट नहीं होता। यहां की सड़कों पर धीमी गति से लेकर तेज गति के वाहन भी चलते हैं, यह देखकर आश्चर्य हुआ। ऐसी बात नहीं है कि इस देश में एक्सीडेंट नहीं होते। देश में साल में करीब 80,000 लोग एक्सीडेंट में मरते हैं। यदि सड़कों पर जान-माल की और गाड़ियों की क्षति का अनुमान लगाएं तो करीब साल में 12,000 करोड़ रुपए का नुकसान होता है।

मैं प्रधान मंत्री जी को और मंत्री महोदय को इसके लिए बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने सोचा कि स्वर्णिम चतुर्भुज के अंतर्गत कोलकाता से दिल्ली, दिल्ली से मुम्बई, मुम्बई से चेन्नई और चेन्नई से कोलकाता को जोड़ा जाए। यह एक बहुत बड़ा कार्य सरकार ने अपने हाथ में लिया है कि सड़कों का सुधार हो सके। मैं मानता हूं कि शेरशाह सूरी के बाद सड़क निर्माण के लिए अगर कोई व्यक्ति जाना जाएगा तो वह अटल बिहारी वाजपेयी जी होंगे। मैं उनको उनकी इस सोच के लिए बधाई देता हूं। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने कहा कि श्रीनगर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात के सुदूर पूर्व से लेकर असम के अंतिम छोर तक राट्रीय राजमार्ग का चौड़ाकरण किया जाएगा। यह एक खुशी की बात है। लेकिन सब बातों के होते हुए भी बहुत से ऐसे इलाके हैं, मैं नाम नहीं लेना चाहता, मैं किसी मंत्री पर आरोप नहीं लगाना चाहता, लेकिन ऐसी सड़कों को ले लिया गया है, जो गांव की सड़कें थीं। वह सड़कें राजमार्ग में नहीं थी और राट्रीय राजमार्ग में भी नहीं थीं। इसके अलावा कुछ महत्वपूर्ण सड़कों को छोड़ दिया गया। एस.एच. 64 इसका एक उदाहरण है। उस पर बाल्मीकि नगर भी आता है, जहां लव और कुश रहे थे। मैंने पूर्व मंत्री जी से कहा था कि आप इसको जोड़ दें। अयोध्या से सीतामढ़ी को जोड़ दें। इस तरह से भगवान राम की जन्भूमि से उनका ससुराल तक का रास्ता जुड़ जाएगा। उन्होंने कहा कि यह हमारे विचार में है, हम इसको करेंगे, आप लगे रहो। मैंने कहा कि सीतामढ़ी का रास्ता नेशनल हाईवे हो गया है। लेकिन मेरा इलाका और पूर्वांचल का इलाका छूट गया है। आज जो राट्रीय राजमार्ग बन रहे हैं, पूरे देश में 57,000 किलोमीटर हैं, लेकिन हमारे यहां बिहार में केवल तीन हजार किलोमीटर है। तीन हजार किलोमीटर के हिसाब से, जो हमारी पोपुलेशन है, जो एरिया है, वह पूरे देश का दसवां भाग है, यदि सौ करोड़ की पोपुलेशन है तो हम दस करोड़ हैं और इसलिए शेयर भी दस प्रतिशत मिलना चाहिए था। दस प्रतिशत के हिसाब से 5700 कि.मी. सड़कें हमारे यहां होनी चाहिए थी लेकिन उतनी नहीं है। आज शायद वह 3000 कि.मी. होगी, 3300 कि.मी. होगी या 3030 कि.मी. होगी। माननीय मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं। मैं जानता हूं कि उनके पास सड़कों के निर्माण के लिए बहुत सी जगहों से मांग है, बहुत सी जगह व्यवस्था भी है। नौंवे प्लान में करीब 8000 करोड़ रु. की राशि उपलब्ध कराई गई। विश्व बैंक से भी राशि दिलवाई गई। 11000 के लगभग केवल आन्ध्र प्रदेश में राट्रीय राजमार्ग बन गया और विश्व बैंक से भी वहां मिला।

बिहार से जब मैं विधायक था तो मैंने प्रश्न पूछा था कि हमारे यहां जो पटना से मुजफ्फरपुर जाने वाला मुख्य मार्ग है, मैंने कहा था कि इस मार्ग को चौड़ा कर दिया जाये। अब वह एनएच-77 हो गया। मैं उसके लिए आभार प्रगट करता हूं। हुआ यह था कि विश्व बैंक से मदद लेकर इसको फोरलेन किया जाएगा, जैसे कानपुर और लखनऊ के बीच की सड़क है, उसी तरह से पटना और मुजफ्फरपुर, ये दो बहुत बड़े केन्द्र हैं और इनमें से एक बिहार की राजधानी है और दूसरी उत्तर बिहार की राजधानी मुजफ्फरपुर है, जिनको जोड़ा जाएगा लेकिन विश्व बैंक से बिहार के लिए एक पैसा भी नहीं मिला। आज भारत सरकार से अनुदान मिल रहा है। प्रधान मंत्री सड़क योजना के तहत वहां एक काम भी शुरू नहीं हुआ है। हमारे यहां सड़कें नहीं बन रही हैं। प्रधान मंत्री सड़क योजना के तहत एक कि.मी. भी सड़क नहीं बनी। जो भी पैसा गया है, उसका क्या हुआ, कुछ नहीं मालूम। आप जो वहां एमआरपी के तहत पैसा देते हैं, मैंने आपसे गंगा ब्रिज के बारे में आग्रह किया था। गंगा ब्रिज बिहार सरकार ने बनवाया है। वह एनएच-77, एनएच-19 और एनएच-31 को जोड़ता है, तीनों को जोड़ता है। आपने बड़ी कृपा की कि आपने मुझे खबर की कि वहां तीन करोड़ एक लेन के लिए और चार करोड़ एक लेन के लिए पैसा उपलब्ध करवाएंगे। इसके लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करूंगा लेकिन आज मैं केवल बिहार की बात नहीं करना चाहता हूं।

माननीय मंत्री जी, दसवां प्लान बन रहा है, मेरा आपसे विशेा अनुरोध होगा कि पूरे देश में ऐसे जो राट्रीय राजमार्ग हैं, बिहार की वित्तीय स्थिति ऐसी हो गई है कि उसके पास अपने सरकारी कर्मचारियों को वेतन देने के लिए भी पैसा नहीं है। बिहार में ऐसे बहुत से शिक्षक हैं जो माइनॉरिटी के हैं और उन्हें वेतन देने के लिए 9 महीने होने जा रहे हैं, बिहार की ऐसी स्थिति है। बिहार से सड़क की जो मांग हो रही है, कितने वर्षों से वहां सड़कों की रिपेयरिंग तक नहीं हुई है। इतनी क्षतिग्रस्त सड़कें हैं, इसीलिए मैं आपसे आग्रह करूंगा कि सरकार की पॉलिसी के तहत जो व्यवस्था है, दसवीं पंचर्वाीय योजना में आप जा रहे हैं, उसके लिए व्यवस्था कर रहे हैं। मैंने शुरू से ही पिछले मंत्रियों से भी आग्रह किया था और यह हुआ कि उस समय राज्य मंत्री सुखदेव बाबू ने कहा कि हम लोग आपके प्लान को करने जा रहे हैं। मैं अनुरोध कर रहा हूं कि पूरे देश के स्तर पर जो स्टेट के हाई-वेज हैं, उन्हें राट्रीय राज मार्ग में लिया जाये और विशेाकर एनएच-28 ए से वहां 28-बी करके इसको उत्तर प्रदेश के कुशी नगर तक जोड़ दिया जाये। इससे एक फायदा यह होगा कि यह नेपाल की सीमा पर है, यदि एनएच-28 का एक पुल टूट गया और नेपाल में कोई घटना घट गई तो हम नेपाल में अपनी फौज को नहीं भेज पाएंगे। इसीलिए यह सड़क और महत्वपूर्ण हो गई है कि गोरखपुर में जो केनटोनमेंट है, उस पूरे इलाके में एक जगह भी केनटोनमेंट नहीं है और गोरखपुर में फौज को यदि भेजना होगा तो इसके लिए कोई दूसरा मार्ग भी नहीं है। इसीलिए इसके महत्व को देखते हुए दसवीं योजना में स्थान देकर इसे स्वीकृति देने की कृपा करें, ऐसी मैं आशा करता हूं। मैं आपके प्रति अपना आभार प्रगट कर रहा हूं और आपको बधाई भी दे रहा हूं कि जो गोल्डन क्वाड्रिलेटरल

हाईवे बन रहा है,

उसके लिए साउथ से नार्थ और ईस्ट से वैस्ट हाईवे बन रहा है। इतनी अच्छी सड़क बन रही है जिसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं। बिहार के बारे में तो हम पहले से ही दुखी हैं। बिहार में जो हाईवे बन रहा है, उसमें दादागिरी चल रही है। मेन कान्ट्रैक्ट दो सौ करोड़ रुपए मे लिया हुआ है, लेकिन पैटी-कान्ट्रैक्ट लेने के लिए थ्रैट किया जा रहा है। कह रहे है कि पैटी-कान्ट्रैक्ट लिया, तो किडनैप कर देंगे।

मैं चाहूंगा कि मंत्री जी मेरे द्वारा प्रस्तुत बातों पर विशेा ध्यान देंगे और बिहार में नेशनल हाईवेज में जो हम पीछे रह गए हैं, उसको पूरा करने में अपनी सहमति देंगे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

MR. CHAIRMAN (DR. LAXMINARAYAN PANDEYA): Resolution moved:

> "This House urges upon the Government to extend National Highway 28A from Chhapwa to Kushinagar *via* Betia, Lauria, Bagaha, Chhitoni Rail cum Road Bridge in the States of Bihar and Uttar Pradesh and also to convert important State Highways to National Highways in all the States on priority basis."

SHRI M.O.H. FAROOK (PONDICHERRY): Sir, let me be brief because other Members have to speak on the subject. I want to bring to the notice of the hon. Minister about the situation of the East Coast road. As far as I know, the East Coast road from Chennai to Pondicherry is absolutely very good. I must congratulate for the action taken at that level. But beyond Pondicherry to Nagapattinam, the position is very bad. It has been considered to be as the National Highway. I must tell you that after Sirgazhi to Porayar, it has become horrible. It means we cannot even go. That is the state of affairs of the National Highway which is there. Therefore, I would like to bring to your notice two things. First, this Sirgazhi to Porayar road has to be repaired on a war footing. Otherwise, no vehicle will be able to go over there. Just two days back, I had been to that place. Therefore, I was able to see that. This is has to be taken up.

Then, your national policy on East Coast road should be given priority. Beyond Pondicherry to Nagapattinam, nothing has been taken up in that direction. So, I would like to urge our hon. Minister to give priority on that line.

You send people to that section to see what I said is correct. You will be satisfied that what I just now said is correct. This is my first point.

Secondly, the road from Pondicherry to Bangalore should have to be taken up. I think my friend wants to take the credit. So, I will give the credit to him. He will speak on the subject. I think it has also to be taken up in the national interest. This is all I just wanted to say.

SHRI ADHI SANKAR (CUDDALORE): Sir, I support the Resolution which is moved by Dr. Madan Prasad Jaiswal for the conversion of State Highways into National Highways.

In my State, Tamil Nadu, most of the roads are under the control of the State Highways Road Authority, particularly, Pondicherry to Chittoor road in my Cuddalore constituency. Also, otherwise, it is named as Cuddalore-Chittoor road or CC road. It is a very, very important road in Tamil Nadu. This road starts from Pondicherry and ends in Bangalore. It is connected by two States and a Union Territory. They are Tamil Nadu, Karnataka and Pondicherry. Nearly 10,000 vehicles are plying on this road daily. Now the road is in a pitiable condition. It is damaged also.

The breadth of the road is also very small. The length of the road is only about 200 kilometres. Due to the smaller breadth and the pitiable conditions, the road is in a damaged condition, as a result of which a number of accidents have occurred.

This road connects many towns. Cuddalore is one of the major towns; it is a district headquarters. Tiruvannamalai is also one of the major towns; it is also a district headquarters. Nellikkuppam is another major town, serving the very famous Parry's sugar mills. Another major town in Panrutti, which is a cashew nut producing area. A lot of cashew nut is cultivated here. A lot of agricultural products are exported from Panrutti. My town, Tirukkovilur is one of the famous temple towns; Tiruvannamalai is also a very famous temple town. These towns are linked in this route. So, I would request the hon. Minister and urge upon the Government to include this road for conversion from State highways to national highways.

With these words, I conclude.

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : माननीय सभापति महोदय, मैं डा. मदन प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रस्तुत राज्य राजमार्गों को राट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित करने संबंधी संकल्प का समर्थन करता हूं। राज्यों के पास वित्तीय संसाधन बहुत सीमित हैं और वे इस स्थिति में नहीं हैं कि सारी सड़कों का निर्माण करा सकें, उन्हें चौड़ी करा सकें, उनकी मरम्मत करा सकें और उनको भली प्रकार मेन्टेन रख सकें। इसलिए परिणामस्वरूप उन्हें केन्द्र पर निर्भर रहना पड़ता है और जब तक उन राज्यों में, जो स्टेट हाईवेज़ हैं, उन्हें राट्रीय राजमार्ग घोाित नहीं किया जाता तब तक केन्द्र सरकार उनकी ओर ध्यान नहीं दे पाती है। हालांकि जो सेस डीजल और पैट्रोल पर लगाया है, उससे जो पैसा आता है, सीआरएफ (सेंट्रल रोड फंड) जो बना है, उसके आधार पर वे सड़कों के निर्माण पर राज्यों को सहायता प्रदान कर रहे हैं, लेकिन फिर भी राज्यों में स्टेट हाईवेज़ की स्थिति बड़ी दयनीय है। जब तक उन्हें राट्रीय राजमार्ग घोाित नहीं किया जाता तब तक उनका विकास नहीं हो सकता।

आपने बिहार के कुछ उदाहरण दिए हैं लेकिन आपने इस संकल्प में जोड़ दिया है कि सभी राज्यों में महत्वपूर्ण राज्य राजमार्गों को प्राथमिकता के आधार पर राट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित किया जाए। मैं केन्द्र सरकार से जानना चाहूंगा कि क्या उन्होंने इस प्रकार का सर्वेक्षण कराया है कि किन-किन राज्यों के अंदर किन-किन स्टेट हाईवेज़ को आगे जाकर राट्रीय राजमार्गों में बदला जा सकता है- क्या इसकी कोई योजना बनाई है? इसके लिए कितनी धनराशि चाहिए और वह धन किस प्रकार से उपलब्ध हो सकेगी। इसके बारे में माननीय मंत्री जी जब जवाब देंगे तो विस्तार से बताने की कोशिश करें।

राजस्थान देश में क्षेत्रफल की दृटि से सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान एक सीमावर्ती राज्य है और देश की वर्तमान स्थिति में, जब मध्य प्रदेश से अलग करके छत्तीसगढ़ बन गया, उसके बाद क्षेत्रफल की दृटि से राजस्थान का नम्बर पहला हो गया, लेकिन राट्रीय राजमार्ग सारे देश के अंदर जो फैले हुए हैं, अगर उसकी तुलना प्रतिशत के हिसाब से की जाए कि राजस्थान में कितना प्रतिशत हिस्सा आता है तो मैं समझता हूं कि राजस्थान इस दृटि से सबसे पिछड़ा हुआ है, राट्रीय राजमार्ग हालांकि राजस्थान में कई होकर गए हैं। मैं मंत्री जी का ध्यान इस तरफ आकर्ति करना चाहूंगा कि जो चतुर्भुज स्वर्णिम गोल्डन एक्सप्रैस हाईवे बन रहा है उसमें जयपुर से लेकर अजमेर के पास किशनगढ़ तक के हिस्से का अभी कोई निर्णय नहीं हो पाया है। आपने नसीराबाद के हिस्से का निर्णय ले लिया। वहां काम भी शुरु हो गया और बड़ी तेजी से काम चल रहा है, नसीराबाद से आगे भीलवाड़ा की तरफ भी काम चल रहा है लेकिन बीच में जो हिस्सा रह गया है, राजधानी जयपुर से लेकर मेरे नि र्वाचन क्षेत्र अजमेर के अंतर्गत किशनगढ़ से, जहां से चतुर्भुज स्वर्णिम पाथ होकर गुजरेगा, उसके बाद श्रीनगर, बाननवाड़ा होकर आगे जाएगा। इसके लिए अभी एक ही पार्टी टेंडर के लिए आई थी। यहां कोई कांटेक्ट नहीं हुआ, इसका अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ। यह ऐसा राजमार्ग है, सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं अजमेर और जयपुर के बीच में होती हैं। आप राजस्थान के समाचारपत्रों को उठा कर देख लें।

अजमेर और जयपुर के बीच में दुधू के आसपास के क्षेत्र में कभी ट्रॉली से जीप टकरा जाती हैं कभी कार ट्रक से टकरा जाती है और अनायास ही लोग मौत के शिकार बन जाते हैं। इसी प्रकार से किशनगढ़ बाई-पास से लेकर वापस उदयपुर तक राट्रीय राजमार्ग नम्बर आठ का जो रास्ता है उसको स्वर्णिम चतुर्भुज के नाम से, नेशनल हाईवे घोाित कर रखा है लेकिन उसके विकास का क्या होगा? जो रोड अजमेर शहर होकर, ब्यावर होकर स्वर्णिम चतुर्भुज की ओर चला जाएगा उसका भी विकास किया जाए। आपको पता ही है कि प्रतिर्वा कार लेकर लाखों लोग जियारत करने के लिए, ख्वाज़ा साहब की चौखट पर, मौहम्मद साहब का पैगाम लेने के लिए आते हैं और अजमेर के बाद ब्यावर जैसी औद्योगिक नगरी है और उसके बाद भीम का इलाका है जहां का मैं रहने वाला हूं, फिर गोमती, नाथ-द्वारा, काकरौली, कैलाशपुर, उदयपुर के बीच का जो रास्ता है जो राट्रीय राजमार्ग नम्बर आठ है और जैसा कि कहा गया कि इसको चार लाइन का नहीं किया जा सकता क्योंकि पहाड़ी इलाका है। किशनगढ़ के पास तक मेरे निर्वाचन क्षेत्र में नसीराबाद होकर के बाननवाड़ा-विजयनगर-भीलवाड़ा होकर जो रास्ता निकाल दिया गया है, मेरी प्रार्थना है कि इन दोनों ही मार्गों का आप ध्यान रखें। जो पहले राट्रीय राजमार्ग घोाित हुआ है उसको निगलैक्ट न करें और जो नया बना है वह तो बनना ही चाहिए।

श्रीमान जी, किशनगढ़ बाई-पास पर लोगों ने जैसे-तैसे सैंकड़ों दुकानें बना ली हैं। मैंने सुना है कि वहां पर बाई-पास पर ओवर-ब्रिज बनेगा जिसके कारण सैंकड़ों की संख्या में बनी हुई दुकानें टूट जाएंगी। वहां के लोग मेरा घेराव करके कहते हैं कि तुम्हारी सरकार, तुम्हारे मंत्री और तुम्हारी नहीं चलेगी। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि राट्रहित में हमें अपने व्यक्तिगत हितों को तिलांजलि देनी पड़ेगी। लेकिन वे लोग मेरा घेराव कर लेते हैं। इसलिए सभापति जी, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। बीओटी में वहां आपने बहुत बड़ा ओवर-ब्रिज बनवा दिया है और इसके बनने के बाद वहां आस-पास दो ओवर-ब्रिज हो जाएंगे। इसलिए वहां ऐसा प्रावधान किया जाए जिससे रास्ता चौड़ा और विकसित हो सके और जहां पार्क वगैरहा की सुविधा हो। चौराहे के पास में कोई दुर्घटना आज तक नहीं हुई है। अगर बिना ओवर-ब्रिज के रास्ता

निकाल दिया जाए तो सैंकड़ों दुकानें भी बच जाएंगी और उन लोगों की रोजी-रोटी भी बची रहेगी।

अजमेर से किशनगढ़ के पास से रुपनगढ़ होकर जो एक रास्ता गया है जो पंजाब के लिए सबसे छोटा रास्ता पड़ता है वह हनुमानगढ़ और भीलवाड़ा होकर जाता है। इससे दिल्ली की भीड़ कम हो जाएगी। वह स्टेट हाईवे है उसको नेशनल हाईवे घोाित करने का सर्वेक्षण कार्य तो करा दिया है। उसका भी आप ध्यान रखें।

राजस्थान क्षेत्रफल की दृटि से सबसे बड़ा राज्य है लेकिन वहां की सड़कें टूटी-फूटी हैं। वहां विशेा सहायता प्रदान करके उन सड़कों को विकसित कराने का भी प्रयास किया जाना चाहिए।

श्री सुकदेव पासवान (अररिया) : माननीय सभापति महोदय, सबसे पहले मैं माननीय मंत्री भुवन साहब को मुबारकबाद देता हूं कि नेशनल हाईवे नम्बर 57 जो मुजफ्फरपुर से दरभंगा और दरभंगा से फारदिसियन और फारदिसियन से औरेय्या होकर के गुलालबाग तक मिलाने के लिए इन्होंने जो प्रयास किये हैं और कुछ रुपये भी दिये हैं। जितना जल्दी हो सके इस नेशनल हाईवे-57 का कार्य पूरा होना चाहिए।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि हमारे नार्थ-ईस्ट के एक मात्र मंत्री माननीय शाहनवाज हुसैन साहब का घर सौपोर में है।

<u>18.00 hrs.</u>

जहां इनका घर पड़ता है, वह एन.एच नम्बर 106 से थाना बीहपुर गए थे। माननीय शरद जी उनको लेकर गए थे। पुराना एक कार्यक्रम था। पिपरा से त्रिवेणीगंज, त्रिवेणीगंज से रानी गंज, रानीगंज से अररिया, अररिया से बहादुरगंज, ठाकुरगंज से गलगलियागंज होते हुए एन एच नम्बर 31 के बारे में बिहार सरकार से पत्र आया है। स्□ज़(व्यवधान) यह अक्लियत इलाका है और बहुत पिछड़ा है। हमारे कैबिनेट मंत्री उसी इलाके से आते हैं। हम इस बारे में प्रधान मंत्री जी से मिल चुके हैं। बिहार सरकार का भी इस बारे में पत्र आया है। इसे स्वीकृति प्रदान कर कामं शुरु किया जाए।

सभापति महोदय : पासवान जी, आप अपना बाकी भााण बाद में जारी रख सकेंगे।

The House stands adjourned to meet on Monday 11th March, 2002 at 11.00 a.m.

<u>18.01 hrs.</u>

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Monday, March 11, 2002/Phalguna 20, 1923 (Saka).